PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL II, ISSUE 01

गुप्त राजवंश

श्री. नितीन गणपत जैद
विद्यावाचस्पती- संशोधक विद्यार्थी
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत

डॉ. शिल्पा गोयल
संशोधन मार्गदर्शक:
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर
राजस्थान भारत

गुप्त राजवंश:

प्राचीन भारत का साम्राज्य(लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू.-575 ई.) गुप्त साम्राज्य (ल. 240/275-550 इस्वी) प्राचीन भारत का एक भारतीय साम्राज्य था। जिसने लगभग संपूर्ण उत्तर भारत पर शासन किया। इतिहासकारों द्वारा इस अवधि को भारत का स्वर्ण युग माना जाता है।

गुप्त साम्राज्य (240 ई.–550 ई.)

चरमोत्कर्ष के समय गुप्त साम्राज्य

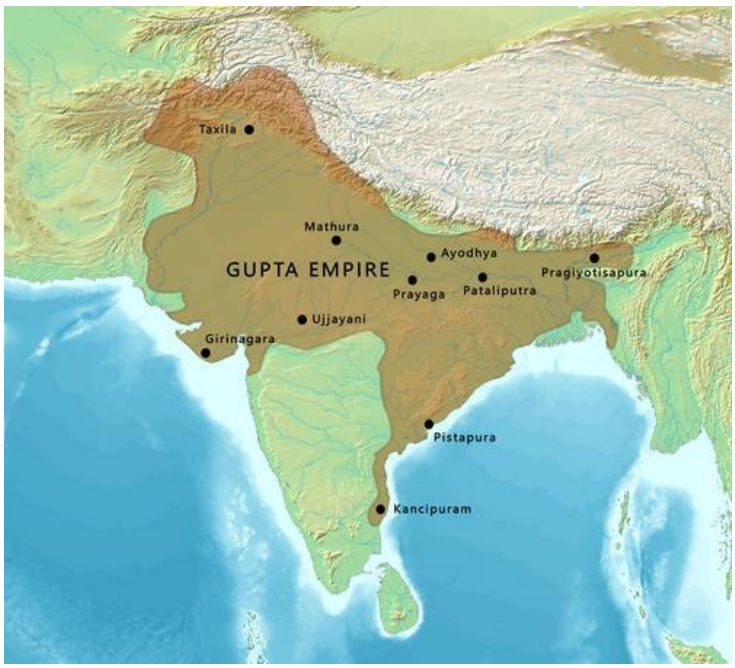

राजधानी- पाटलिपुत्र

भाषाएँ- संस्कृत

धार्मिक समूह- हिन्दू धर्म,बौद्ध धर्म

शासन- पूर्ण राजशाही

महाराजाधिराज-

240 ई–280 ई श्रीगुप्त

319 ई–335 ई चन्द्रगुप्त प्रथम

540 ई–550 ई विष्णुगुप्त

ऐतिहासिक युग- प्राचीन भारत

स्थापित- 240 ई.

अंत - 550 ई.

क्षेत्रफल- 400 ईस्वी.

(शिखर क्षेत्र का उच्चस्तरीय अनुमान)

35,00,000 किमी (13,51,358 वर्ग मील) 440 ईस्वी.

(शिखर क्षेत्र का निम्न-अंत अनुमान)

17,00,000 किमी (6,56,374 वर्ग मील)

मौर्य वंश व शुंग वंश पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही। कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ई-स्वी सन में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।

इस काल की अजन्ता चित्रकला

गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था। साम्राज्य के पहले शासक चंद्र गुप्त प्रथम थे, जिन्होंने विवाह द्वारा लिच्छवी के साथ गुप्त को एकजुट किया। उनके पुत्र प्रसिद्ध समुद्रगुप्त ने विजय के माध्यम से साम्राज्य का विस्तार किया। ऐसा लगता है कि उनके अभियानों ने उत्तरी और पूर्वी भारत में गुप्त शक्ति का विस्तार किया और मध्य भारत और गंगा घाटी के कुलीन राजाओं और उन क्षेत्रों को वस्तुतः समाप्त कर दिया जो तब गुप्त वंश के प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण में आ गए थे। साम्राज्य के तीसरे शासक चंद्रगुप्त द्वितीय (या विक्रमादित्य, "शौर्य का सूर्य") उज्जैन तक साम्राज्य का विस्तार करने के लिए मनाया गया, लेकिन उनका शासनकाल सैन्य विजय की तुलना में सांस्कृतिक और बौद्धिक उपलब्धियों से अधिक जुड़ा हुआ था। उनके उत्तराधिकारी-कुमारागुप्त, स्कंदगुप्त और अन्य-ने धुनास (हेफ्थालवासियों की एक शाखा) पर आक्रमण के साथ साम्राज्य के क्रमिक निधन को देखा। 6 वीं शताब्दी के मध्य तक, जब राजवंश का अंत हुआ, तो राज्य एक छोटे आकार में घट गया था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति:

गुप्त सामाज्य का उदय तीसरी शताब्दी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ था। जिस प्राचीनतम गुप्त राजा के बारे में पता चला है वो है श्रीगुप्त। हालांकि प्रभावती गुप्त के पूना ताम्रपत्र अभिलेख में इसे 'आदिराज' कहकर सम्बोधित किया गया है। पुराणों में ये कहा गया है कि आरंभिक गुप्त राजाओं का साम्राज्य गंगा द्रोणी, प्रयाग, साकेत (अयोध्या) तथा मगध में फैला था। श्रीगुप्त के समय में महाराजा की उपाधि सामन्तों को प्रदान की जाती थी, अतः श्रीगुप्त किसी के अधीन शासक था। प्रसिद्ध इतिहासकार के. पी. जायसवाल के अनुसार श्रीगुप्त भारशिवों के अधीन छोटे से राज्य प्रयाग का शासक था। चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार मगध के मृग शिखावन में एक मन्दिर का निर्माण करवाया था। तथा मन्दिर के व्यय में २४ गाँव को दान दिये थे। चंद्रगुप्त द्वितीय की बेटी, गुप्त राजकुमारी प्रभावती-गुप्ता के पुणे और रिद्धपुर शिलालेखों में कहा गया है कि वह धारणा गोत्र से संबंधित थीं।

धर्म: श्रीगुप्त ने गया में चीनी यात्रियों के लिए एक मंदिर बनवाया था जिसका उल्लेख चीनी यात्री इत्सिंग ने ५०० वर्षों बाद सन् ६७१ से सन् ६९५ के बीच में किया।

सारनाथ में धर्मचक्र प्रवर्तन बुद्ध गुप्त काल से, 5वीं शताब्दी ई.

कुमारगुप्त एक (455 ई) कहा जाता है कि नालंदा की स्थापना की। आधुनिक आनुवांशिक अध्ययन इस बात का संकेत देते हैं कि गुप्त युग में ही भारतीय वर्ण समूहों ने विवाह नहीं किया (अंतरजातीय विवाह की प्रथा शुरू की) और स्वयं को अंतःसमूही बना लिया।

लाल बलुआ पत्थर में बुद्ध, मथुरा की कला, गुप्त काल लगभग 5वीं शताब्दी

p

1. *Guptânâṁ samatikkrântê sapta-paṁchâśad-uttarê* (|) *śatê samânâṁ pṛithivîṁ Budhaguptê praśâsati* ||

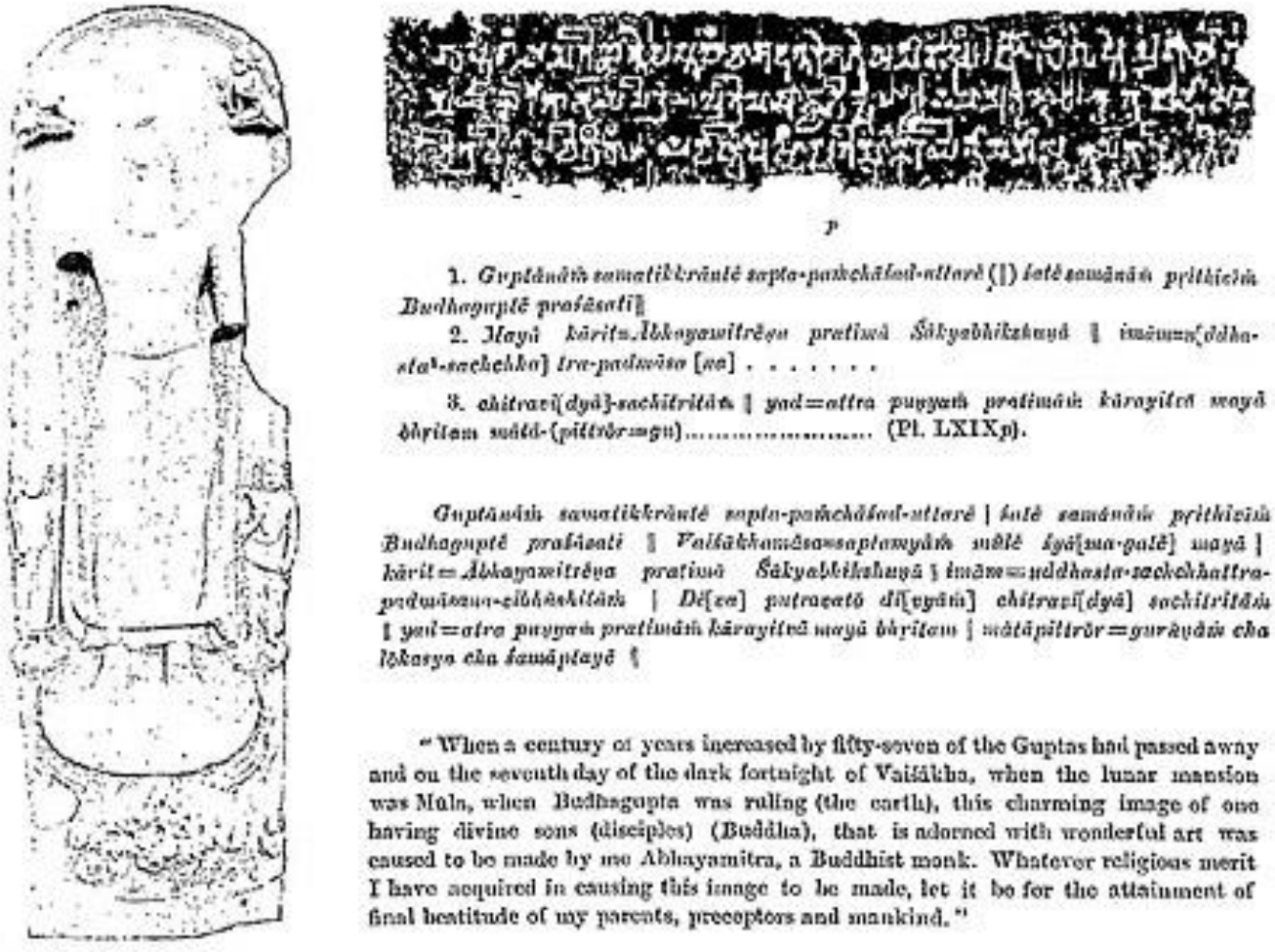

2. *Mayâ kârita-Abhayamitrêṇa pratimâ Śâkyabhikshuṇâ* || *imâm=(uddha-sta*[1]*-sachchha*] *tra-padmâsa* [*na*] . . . .

3. *chitravi*[*dyâ*]*-sachitritâṁ* || *yad=atra puṇyaṁ pratimâṁ kârayitvâ mayâ bhṛitam mâtâ-*(*pitrôr=gu*)........................ (Pl. LXIX*p*).

Guptânâṁ samatikkrântê sapta-paṁchâśad-uttarê | *śatê samânâṁ pṛithivîṁ Budhaguptê praśâsati* || *Vaiśâkhamâsa=saptamyâṁ mûlê śyâ*[*ma-gatê*] *mayâ* | *kârit=Abhayamitrêṇa pratimâ Śâkyabhikshuṇâ* || *imâm=uddhasta-sachchhattra-padmâsana-vibhûshitâṁ* | *Dê*[*va*] *putravatô di*[*vyâṁ*] *chitravi*[*dyâ*] *sachitritâṁ* || *yad=atra puṇyaṁ pratimâṁ kârayitvâ mayâ bhṛitam* | *mâtâpitrôr=gurûṇâṁ cha lôkasya cha śamâptayê* ||

"When a century of years increased by fifty-seven of the Guptas had passed away and on the seventh day of the dark fortnight of Vaiśâkha, when the lunar mansion was Mûla, when Budhagupta was ruling (the earth), this charming image of one having divine sons (disciples) (Buddha), that is adorned with wonderful art was caused to be made by me Abhayamitra, a Buddhist monk. Whatever religious merit I have acquired in causing this image to be made, let it be for the attainment of final beatitude of my parents, preceptors and mankind."

गुप्त युग वर्ष 157 में बुधगुप्त का बुद्ध शिलालेख (दूसरी मूर्ति), एक्सट्रपलेशन और अंग्रेजी अनुवाद के साथ।

सन्दर्भ:

1. पृ.17 : अपने चरम पर गुप्त साम्राज्य (5वीं-6ठी शताब्दी ई.) महायान बौद्ध धर्म के विकास से जुड़े स्थान तांत्रिक बौद्ध धर्म के विकास से जुड़े स्थान बौद्ध विश्वविद्यालय के मठ, गनेरी, अनीता (2007)।

बौद्ध धर्म। इंटरनेट आर्काइव। लंदन: फ्रैंकलिन वाट्स। पृ. 17. आईएसबीएन 978-0-7496-6979-9

श्री. नितीन गणपत जैद डॉ. शिल्पा गोयल

2. टर्चिन, पीटर; एडम्स, जोनाथन एम.; हॉल, थॉमस डी (दिसंबर 2006)
"ऐतिहासिक साम्राज्यों का पूर्व-पश्चिम अभिविन्यास"।
जर्नल ऑफ वर्ल्ड-सिस्टम्स रिसर्च.12 (2): 223. DOI:10.5195/JWSR.2006.369.
आईएसएसएन 1076-156X

3. Gupta Dynasty- MSN Encarta" ।
Archived 2009-10-29 at the वेबैक मशीन "संग्रहीत प्रति".
मूल से से 29 अक्तूबर 2009 को पुरालेखित। अभिगमन तिथि: 7 फ़रवरी 2021.